बीच के लोग : प्रगतिशील दृष्टीकोण

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथासाहित्य में मार्कण्डेय का स्थान महत्वपूर्ण है । मार्कण्डेय स्वातंत्र्योत्तर कथासाहित्य में ग्रामीण अंचल की लोकसंस्कृति, भाषा स्थानीय जीवन को सूक्ष्मरूप से चित्रित करने में सिद्ध हस्त रचनाकार माने जाते हैं ।

समाजवादी एवं प्रगतिशील विचारधारा की बुनियाद अपनी युगीन परिस्थितियों के कारणस्वरुप रची गयी । इसलिए मार्कण्डेय को युगीन परिवेश एवं स्वानुभूति से कथासाहित्य को चित्रित करनेवाले बेजोड रचनाकार कहा जाता है । माध्यमिक शिक्षा पूर्ण होने से पूर्व ही पिता की मृत्यु ने उनके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला । उन्होंने अवध की तालुकेदारी करते वक्त जनता पर होने वाले अत्याचारों और अन्यायों को देखा, लगान की वसूली के लिए बेगार और नजराने के लिए उनके साथ होनेवाले पशुओं से भी बदतर सलूक को देखा समाज में व्याप्त वर्ग विषमता, आर्थिक विषमता, निर्धनता, अंधविश्वास, रुढियों को उन्होंने नजदीकी से देखा था । इन सब के परिणाम स्वरुप उनके साहित्य की सृष्टि हुई है । शोषित मनुष्यों के प्रति अपनी पक्षधरता, दलित एवं पीडित मनुष्य के प्रति सहृदयता उनको बेहतर जिंदगी देने के लिए अडना आदि कर्म तत्संबंधी परिवेश की उपज है जो मार्कण्डेय के साहित्य की जान है ।

इतना ही नहीं मार्कण्डेय की अनुभूति युगीन परिवेश के अनुरूप बराबर परिवर्तित होती रही है । जिस गाँव से वे जुडे हुये हैं, वहाँ की कोई अकेली अनुभूति नहीं बल्कि उसके पीछे एक सन्दर्भ एवं अनुभूतियों की कडी भी झांकती हुई नजर आती है । इस अनुभव विश्व के अबाध और अथाह रूप को विशिष्ट दृष्टिकोण लक्ष्य अथवा उद्देश्य के अनुसार उन्होंने अभिव्यक्ति दी है, जिसका परिचय हमें उनके कथासाहित्य से होता है ।

मार्कण्डेय की विचारधारा एवं युगीन परिवेश पर दृष्टि डालने के बाद बीच के लोग कहानी का मूल्यांकन करना जरूरी है ।

बीच के लोग इस कहानी में स्वातंत्र्योत्तर भारत में बदली हुयी परिस्थितियों के कारण आया हुआ वैचारिक परिवर्तन शोषण तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण को व्यक्त किया गया है ।

संक्षिप्त रुप से कथ्य को जान लेते है । फऊदी दादा और बुझावन महतों दोनों सुराज पार्टी में शामिल होकर आजादी की लड़ाई साथ में लडे थे । उनमें गहरी मित्रता है । यहां तक की फऊदी दादा निम्नवर्गीय बुझावन महतो के साथ में आलू भूनकर खाते है । फऊदी दादा एक प्रकार से गाँव के मुखिया ही है । जिसकी बातों एवं मतों का सभी आदर करते हैं । न्याय-अन्याय, नीति-अनीति और अच्छे व्यवहार को देखकर वे निर्णय देते हैं इसलिए बिना फऊदी दादा के गाँव में कोई कार्य घटना नहीं है ।

बुझावन महतो आठसाल से हरदयाल की जमीन पर मेहनत मशक्कत करता है । जिसका वह लगान भी भर रहा है । इस जमीन को हरदयाल सहुआ को बेचना चाहता है सहुआ उस जमीन पर पंप सेट लगाना चाहता है । यह अन्याय सहन न होकर बुझावन महतो अपने मित्र फऊदी दादा के पास चले जाते हैं । वे नीति -अनीति कायदे - कानून की बात कहकर बुझावन को समझाने का प्रयास करते हैं ।

उसी रात रग्घू द्वारा सहुआ के कान भरनेपर वह जमीन खरीदने से मना करता है । हरदयाल इससे क्रोधित होकर रातोरात बुझावन के खेत से आलू उखाडकर फसल उजाडता है । ऐसे माना जाता है कि परानपूर में स्वतंत्रता के बाद पहली दफा फउदी दादा के होते हुए हितक घटना हुई हैं । फउदी दादा इससे टूट जाते है । हताश होकर आदर्शो की हार देखते है - 'फउदी दादा बीच - बचाव करने का प्रयास करते है परन्तु परिस्थितियाँ उन्हें इस बात का एहसास करा देती है कि इस संघर्ष से उनके आदर्श व्यर्थ हो चुके है । क्योंकि नई उभरनेवाली शक्ति का संघर्ष अधिकारों एवं न्याय का संघर्ष है और वह शोषण को अधिक सहने के लिए तैयार नहीं है ।

दूसरे दिन सबेरे बुझावन अपने आलू वाले खेत को उलटकर उसमें प्याज लगाने के लिए हल चलाने जा रहा था तो हरदयाल उसे रोक कर खुद खेत जोत लेने के लिए दल साज रहा था । फऊदी दादाने कानून को हवाला देकर दोनों को रोकना चाहा पर बुझावन का बेटा मनरा जो लाल झण्डा पार्टी के सम्पर्क में आने के कारण प्रगतिशील बन गया था उसने विरोध किया और कहा कि 'कानून और न्याय गरीब को खेत देता नहीं उससे छीनता है ।'' हम ऐसे धोखे में नहीं आयेंगे । हम जमीन को

जोतेंगे ।

इस संघर्ष को रोकने में नाकामयाब फऊदी दादा किसे से मोर्चे पर न आने की बात कहते हैं तो मनरा भी अपने मनोभावों को व्यक्त करता है कि जरूरत तो ऐसी है । अच्छा हो कि दुनिया को जस का तस बनाये रहनेवाले लोग अगर हमारा साथ नहीं दे सकते तो बीच से हट जाए नहीं तो सबसे पहले उन्हीं को हटाना होगा । क्यों कि जिस बदलाव के लिए हम रण रोपे हुए हैं वे उसी को रोके रहना चाहते हैं । नयी वैचारिक उर्जा परिस्थितियों को जैसे के तैसे स्वीकारने वालों के विरूद्ध रोपे हुए हैं । परिवर्तत से परानपुर गाँव में सब के लिए समान हक्क की चेतना लाना चाहते हैं ।

'बीच के लोग' कहानी में आर्थिक विपन्नता अभावग्रस्त जिंदगी, शोषित वर्ग, अन्याय एवं अत्याचार को चित्रित किया है । आज की इस व्यवस्था में श्रम करनेवाला वर्ग अभावग्रस्त है, बुझावन महतो जमीन की खुदाई-मेहनत मशक्कत कर स्वाद डालकर उसे उपजाऊ बनाता है लेकिन हरिदयाल उस जमीन को उससे छीनना चाहता है । इस कहानी में कसी हुयी जमीन से आलू खोदना, उखाड़ना और उसको हथियाने का प्रयत्न करना आदि किसान तथा निम्नवर्ग पर जमींनदारों द्वारा किये गये अत्याचारों का साक्ष है । ज्वलंत उदाहरण है ।

स्वतंत्रता पाप्ति के बाद ग्रामीण परिवेश में आम आदमी के अंतर्गत अधिकार-बोध जागृत हुआ है । इस कारण सामाजिक जनचेतना ने निम्नवर्ग कृषक वर्ग के जगाया है । परानपूर में निम्नवर्ग का अन्याय के विरुद्ध प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण रूढ़िगत, धार्मिक, सामाजिक मान्यताओं के प्रति विरोध तथा उन्नति की आशा, प्रगतिशील दृष्टिकोण, पिछडेपन की अनुभूति और जनजागृति की नवीन चेतना की अभिव्यक्ति 'बीच के लोग' कहानी में यथार्थ वादी धरातल पर हुई है । यह भी देखा गया है कि अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने की भावना निरी क्रांतिकारी ढंग की नहीं है बल्कि परानपूर का विकास कराने की प्रगतिशील चेतना है । बुझावन महतों की जमीन हड़पनेवाले हरदयाल तथा महाजन का विरोध करने के लिए मनरा और फऊदी दादा का बेटा बचवा के माध्यम से नयी पीढ़ी की शक्ति उभरकर आ रही है ।

मनरा द्वारा फऊदी दादा को साफ-साफ बता देना कि बीच के लोगों को विकास की ओर बढ़नेवालों को रोकने का कोई अधिकार नहीं है वे हमारे रास्ते से हट जाये ।

- डॉ. वृषाली मार्टेकर